मेरे प्रिय भगवान

शंकर जी

आप सभी को सुख क्यों नहीं देते? किसी को सुख देते हो और किसी को दुख देते हो। आपसे बहुत लोग कुछ माँगते हैं। आप कई लोगों की बात मान लेते हो, कई की नहीं मानते। ऐसा क्यों करते हो? लोगों के साथ अन्याय क्यों करते हो?

— आपका भक्त
श्रद्धेश दिवेदी, होशंगाबाद

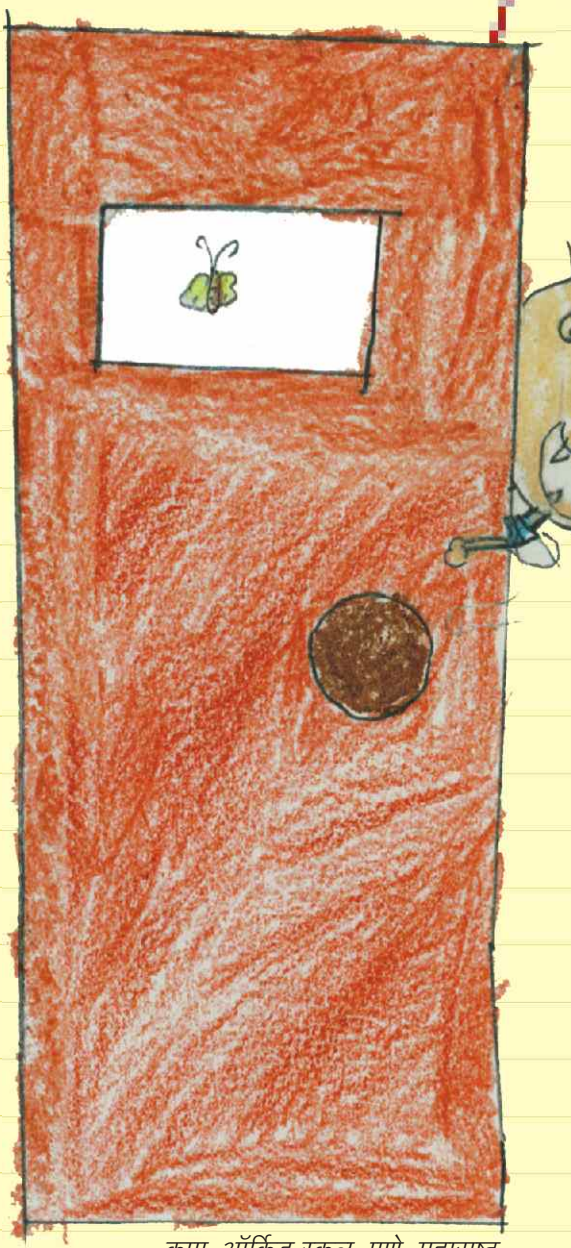

— कृपा, ऑर्किड स्कूल, पुणे, महाराष्ट्र

अन्तरिक्ष में कारनामा

राजेश नाम का एक व्यक्ति था, जिसकी इच्छा यह थी कि वह अन्तरिक्ष में जाकर कुछ खोज करे। उसने अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए एक रॉकेट तैयार किया।

राजेश अकेला ही अन्तरिक्ष में चला गया। वह अपने साथ कई दिनों के खाने-पीने का सामान भी ले गया। अचानक उसके रॉकेट में कुछ खराबी आ गई। खराब होने के कारण उसे अपना रॉकेट एक ग्रह पर उतारना पड़ा।

उस ग्रह पर उतरकर उसे ऐसा लगा कि उसकी मंज़िल यहीं है। वह वहीं पर अपने रॉकेट को ठीक करने लगा। तभी राजेश को किसी के भागने की आवाज़ सुनाई दी। उसने मुड़कर देखा कि वहाँ से एक अजीब तरह का जीव भाग कर जा रहा है। राजेश को ऐसा लगा कि वह जीव उससे डर गया है और वह अपने साथियों के पास जा रहा है। राजेश बिना सोचे-समझे उस जीव के पीछे दौड़ पड़ा। वह जीव देखने में भी बहुत अजीब था – मुँह आदमियों से दुगुना था जिसके सिर पर बालों की जगह दो एंटीना थे। उसके कान हाथी की तरह थे और उसके हाथों में तीन उँगलियाँ और एक अँगूठा था। उसके पैरों में दो उँगलियाँ और एक अँगूठा था।

राजेश का शक सही निकला वह अपने साथियों के पास ही जा रहा था। उस जीव ने अपनी भाषा में कहा कि हमारे ग्रह पर एक जीव आया है जो देखने में हमारी तरह नहीं है। सभी जीवों ने उसकी बात मानी और उसके साथ चल दिए। लेकिन राजेश डरा नहीं। वह निडर होकर अपने रॉकेट के सामने आया। सभी जीव राजेश को देखकर डर गए लेकिन राजेश डरा नहीं। वह अपने रॉकेट में गया और वहाँ से कैमरा ले आया। उसने उन जीवों की तस्वीर कैमरे में उतारी लेकिन जब कैमरे की लाइट उन जीवों पर पड़ी तो सभी जीव डर गए। उन जीवों में भगदड़ मच गई। इस भगदड़ में एक जीव घायल हो गया। राजेश ने उस जीव का इलाज किया। इलाज से जीव जल्दी ठीक हो गया। और मौका देखकर भाग निकला। राजेश को उस जीव का करना भी क्या था। वह उसकी बहुत-सी तस्वीरें उतार चुका था। राजेश उसको पीछे से हाथ हिलाकर धन्यावाद दे रहा था। राजेश का रॉकेट ठीक हो गया। वह अपनी पृथ्वी पर आ गया। उसने सारी तस्वीरें लोगों को दिखाईं जिससे उसका नाम हो गया। अब हर जगह राजेश का ही नाम गूँजता था।

— अजय कुमार, आठवीं, खिचड़ीपुर, दिल्ली

मेरा पन्ना

बात पुरानी

बहुत पुरानी बात है। एक जंगल था। उस जंगल में मन्दिर था। उस मन्दिर का नाम हनुमान था। वह सोने का बना था। बहुत से राक्षस उस मन्दिर को ढूँढ रहे थे। इसलिए वे राक्षस एक-दूसरे से लड़ने लगे थे। सभी सोचते थे कि वह मन्दिर मेरा हो जाए। उस मन्दिर में एक पुजारी रहता था। वह अकल और चालाकी से काम लेता था। एक दिन वह सुबह फल लेने निकला। तो उसे बहुत से राक्षस मिले। तो उसने कहा कि आपस में झगड़ा क्यों कर रहे हो? राक्षस कहता है कि जो इस समुद्र को पहले पार कर जाएगा वही उसे ढूँढ लेगा। सब राक्षस समुद्र में जाने लगे। थोड़ी दूर जाकर सभी राक्षस डूब गए। वह मन्दिर किसी को नहीं मिला। पुजारी आराम से रहने लगा।

— लवकुश, पाँचवीं, अपना घर, कानपुर, उ. प्र.

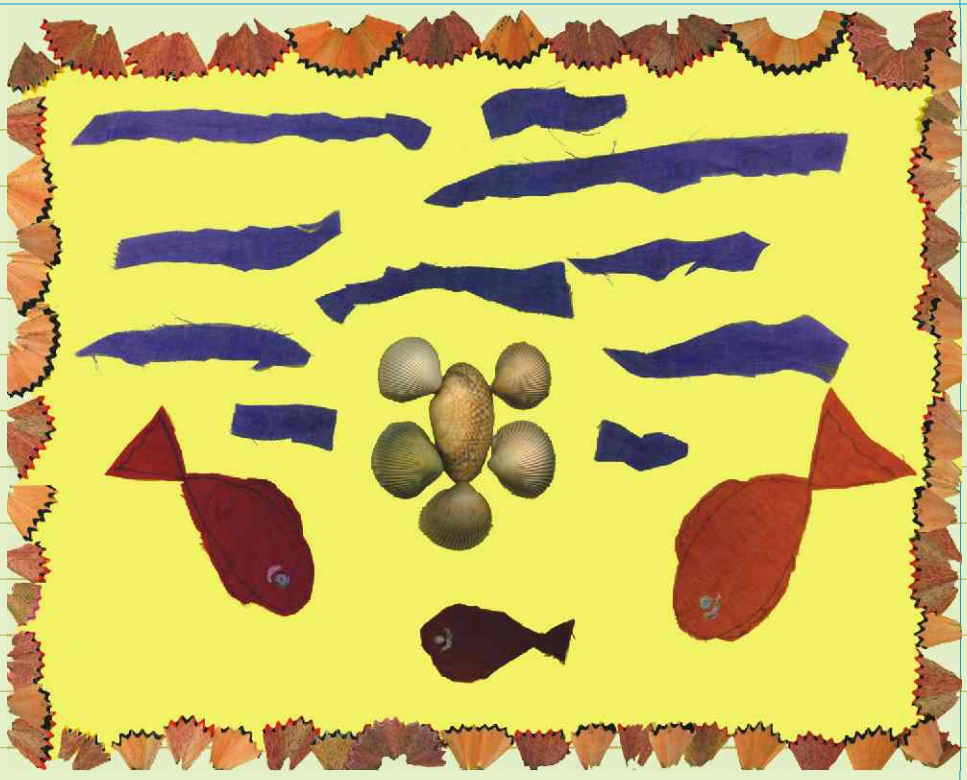

— चिया, पाँचवीं, अपना घर, कानपुर, उ. प्र.

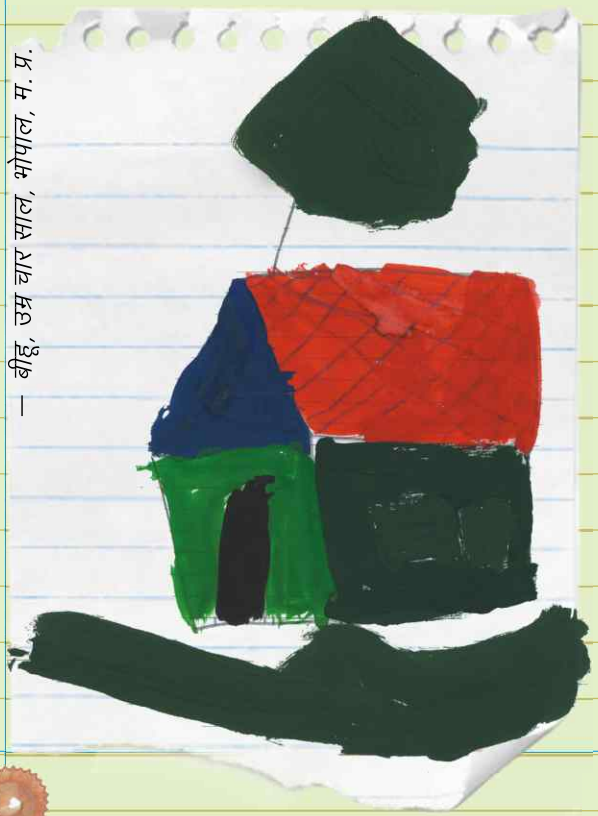

— बीहू, उम्र चार साल, भोपाल, म. प्र.

दुश्मनी-दोस्ती

मनु और मोहित एक ही क्लास में पढ़ते हैं। खाली पीरियड हो, रिसेस हो या छुट्टी के बाद का वक्त दोनों एक-दूसरे से भिड़ने का कोई मौका नहीं छोड़ते। आज स्कूल से निकल कर बस स्टॉप जाते हुए बात कुछ ज़्यादा ही बढ़ गई। दोनों के बस्ते एक तरफ और लंचबॉक्स दूसरे तरफ। दोनों गुत्थमगुत्था एक-दूसरे को पीटने में पागल हो गए। तभी मोहित का एक पंच मनु को पड़ा और उसके मुँह से खून आ गया। कुछ क्षणों में वह चक्कर खाकर गिर गया। मोहित घबराकर वहीं बैठ गया। वह बुरी तरह डर गया। उसके माथे से पसीना छूटने लगा। उसने इधर-उधर देखा तो कोई नज़र नहीं आया जो कि उसकी मदद कर सके। मोहित ने मनु को सम्भालते हुए उठाया और उसे लेकर डॉक्टर की दुकान पर पहुँचा। तभी डॉक्टर साहब वहाँ आए और मनु को पलंग पर लेटाकर उसके मुँह पर लगा खून साफ करके उसको होश में लाने की कोशिश कर रहे थे। घर पर मनु और मोहित का सभी इन्तज़ार कर रहे थे। तभी मोहित ने अपने घर फोन करके अपनी मम्मी को सब कुछ बता दिया। अब तक मनु के माता-पिता को भी पता लग चुका था। वह भी मनु को देखने पहुँचे। मोहित डर के मारे काँप रहा था कि अब उसकी बुरी तरह पिटाई होगी। अब तक मनु भी होश में आ गया था। उसने मोहित की ओर देखते हुए सभी से कहा कि मोहित की कोई गलती नहीं है। मोहित यह सुनते ही मनु से लिपट पड़ा।

— काजल चौहान, दिल्ली

— हीतिम, के. जी. सेकण्ड, भोपाल, म. प्र.

जूते का मतलब

एक लड़का था। उसका नाम लालू था। उसका पापा उसे स्कूल जाने के लिए कहता लेकिन वो नहीं जाता। एक दिन उसका पापा उसे स्कूल ले गया और मास्टरजी से बोला, "मास्टर जी ये स्कूल नहीं आता। इसे बैठाया करो और मारा करो।"

मास्टर पाँच जूते देता और एक सवाल समझाता। बच्चा कहता, "मास्टर जी आप मेरे जूते क्यों मारते हो?" मास्टर ने कहा कि तेरे बाप ने कहा है। लालू ने घर जाकर अपने पापा से कहा, "पापा आज मैंने मार खाई।" पापा ने कहा, "कितनी खाई?" लालू ने कहा, "एक सवाल पर पाँच जूते।" पापा ने कहा, "बेटे तू स्कूल नहीं जाता इसलिए हैं ये जूते।" बच्चे ने कहा, "पापा मैं स्कूल जाऊँगा।" पापा ने कहा कि स्कूल जाओगे तो जूते नहीं मिलेंगे। बच्चा उल्टा समझा, उसने कहा, "जूते नहीं मिलेंगे तो मैं पहनूँगा क्या?" पापा ने कहा, "जूते नहीं मिलेंगे मतलब मार नहीं पड़ेगी।" लालू ने कहा, "ठीक है।"

— अनूप कुमार मीणा, उम्र 10 वर्ष, सवाईमाधोपुर, राजस्थान

— चैतन्य कौशिक, आठवीं, भोपाल, म. प्र.